हिन्दी फिल्मी गीतः साहित्य, स्वर, सगीत

डॉ0 महिन्द्र कौर
अस्टिैंट प्रोफेसर, संगीत गायन
आर्य पी.जी. कॉलेज, पानीपत।

हिन्दी फिल्मों के गीत इस देश में आरम्भ से ही आम–आदमी के सुख–दुख के साथी रहे हैं, जिनकी तुलना दो पीढ़ी के लोकगीतों से की जा सकती है। इस देश की अद्‌भुत विविधता को एकता के सूत्र में बाँधने में हिन्दी फिल्मों का योगदान सभी स्वीकार करते हैं।

भारत में फिल्म निर्माण के सौ वर्ष के हतिहास में सवाक फिल्मों का इतिहास पैंसठ साल का है। इसमें पार्श्व गायन का हिस्सा लगभग छह दशक है। इस कालखण्ड में रचे फिल्माएँ हजारों गीतों में से यादगार लगभग कालजयी गीतों की संख्या भी सैकड़ों में पहुँची है।

किसी भी फिल्मी गीत का प्रभाव भाब्द (साहित्य), स्वर (गायक की वाणी) संगीत (शास्त्रीय अथवा लोक) के साथ–साथ जिस अभिनेता पर यह फिल्माया गया है और कथानक के भाव विहल करने वाले मोड़ के सन्निपात पर निर्भर करता है। संगीत निर्देशक, निर्देशन भूमिका को गायक या गीतकार/कवि/शायर से कमतर नहीं आंका जा सकता। श्रोता के लिए किसी भी गीत को अपनाने के लिए इनमें से प्रत्येक के संदर्भ में व्यक्गित पंसद या नापसंद महत्त्वपूर्ण कसौटी होती है यही कारण है कि कुछ जुगल बदियों या जोड़िया सफलता के शिखर चूमने और लम्बे समय तक लोकप्रिय बने रहने में सफल होती है।

शैलेंद्र–मुकेश– शंकर–जयकिशन–राजकपूर की जोड़ियां इस संदर्भ में अनायास याद आती है। 'आह' से लेकर 'तीसरी कसम' तक आप इनकी किसी भी फिल्म को ले वह हिट हो या फ्लॉप उसके कुछ गीत निश्चय कालजयी परीक्षा में खरे उतरते है। भांकर–जयकिशन, शैलेंद्र और मुकेश की त्रिवेणी ने 'तीसरी कसम' में लोक संगीत के चाहने वालो को घर बैठे 'संगीत स्नान' का सुख पहुँचा दिया। 'सजनवा बैरी हो गए हमार'

पिंजरे वाली मुनिया, दुनिया बनाने वाले क्या तेरे मन में समाई, 'सजन रे झूठ मत बोलो, पान खाय सैया हमार, इन गीतों में प्रमुख है।

जहाँ तक स्वर का सम्बंध है तो वह गायक की वाणी से है और इसी वाणी की धनी फिल्मी संगीत की दुनिया में भारत रत्न लता मंगेशकर की अद्वितीय प्रतिष्ठा है। उनकी छह दशक के विस्तार वाली संक्रियता की तुलना किसी अन्य गायक से नहीं की जा सकती। जितने संगीत निर्देशकों, गीतकारों के साथ उन्होंने काम किया है या जितने कलाकारों को वाणी दी है उनकी संख्या का मुकाबला भी सम्भवतः दिवंगत मुहम्मद रफी को छोड़ किसी के साथ नहीं किया जा सकता। यह बात स्वतः प्रमाणित स्वयं सिद्ध है कि उनके मीठे गले या असाधारण स्वर साधना के कारण ही उनका गाया हर गाना हमेशा बड़ा होता रहा है गीतकार के मर्मस्पर्शी शब्दों का कितना बड़ा योगदान उनकी सुरीली आवाज का जादू जगाने में रहा है विचारणीय है। शब्दों को उपयुक्त संगीत से सजाने वाले संगीत निर्दे ाक का योगदान भी अनदेखा नहीं किया जा सकता। लता मंगेशकर की प्रतिभा के स्वभाव तथा संस्कार के अनुकूल रचना–शब्द संयोजन–संगीत का सृजन गीतकार तथा संगीत निर्देशक के लिए कम बड़ी चुनौती नहीं रहा होगा।

फिल्मी गीतों को लोकप्रिय बनाने में साहित्य के योगदान को नजर अंदाज नहीं किया जा सकता। उस समय के प्रसिद्ध हिन्दी कवियों में प्रदीप, नीरज, इदिवर, शैलेंद्र आदि के नाम लिए जाते है। गुलजार जी ऐसे अकेले गीतकार/निर्देशक हैं जिन्होंने उर्दू, हिन्दी, पंजाबी, राजस्थानी या पूर्वी बोलियों में मन को मोह लेने वाले गीतों की रचना की है। बंदिनी फिल्म का गीत 'मोरा गोरा अंग लइले, 'मोहे श्याम रंग दइदे, से लेकर 'यारा सिली–सिली रात का ढलना अथवा चप्पा–चप्पा चरखा चले' आदि।

फिल्म उमराव जान तथा गमन में शहरयार की रचनाओं का अलग से उल्लेख जरूरी है। मुजफ्फर अली ने निश्चय ही उनकी प्रतिभा का बेहतरीन फिल्मी उपयोग किया। दिल चीज क्या है आप मेरी जान लीजिए तथा ये क्या जगह है दोस्तों, की पकड़ और पहुँच तीन दशक बाद भी जस की तस बरकरार है।

संगीत निर्देशकों ने भी जाने कितनी विधाओं से प्रेरणा ही नहीं बहुत कुछ और सामग्री निसंकोच ग्रहण की है। पंजाबी हीर, राजस्थानी माँड, उत्तर प्रदेश–बिहार के फाग या बिदेसिया, गुजरात का गरबा, लखनऊ–पटियाला, बनारस की ठुमरी दादरा, ने अनगिनत हिन्दी फिल्मी गीतों का पाषाण प्रतिमाओं में प्राण प्रतिष्ठा की है। गजल की सही अदायगी

या कव्वाली से समा बाँधने की अपनी क्षमता के कारण कुछ संगीत निर्देशक 'अमरत्व' प्राप्त कर सके हैं। खैयाम, मदन मोहन, रोशन के नाम सबसे पहले याद आते हैं। अनिल विश्वास सभी विधाओं में समान रूप से निष्णात, तो जयदेव शास्त्रीय एव्म सलिला चौधरी लोक संगीत के प्रति रूझान वाले संगीतकार समझे जाते हैं।

बंगाल की लोक संगीत सम्पदा से हिन्दी फिल्मी संगीत को समृद्ध करने में अग्रणी सचिन देव बर्मन है जिन्होंने अपनी फिल्मों में भटियाली और बाउल का अद्‌भुत प्रयोग किया।

नौशाद का रचना संसार और सुदीर्ध कार्यकाल अतुलनीय है। जमाने के साथ बदलने की जरूरत उन्होंने कभी महसूस नहीं की। अपनी संगीतिक कल्पना के पंख कतरे बिना उन्होंने निर्माता–निर्देशक के आग्रह को पूरा करने का प्रयत्न जारी रखा। जहाँ लोक की जरूरत लगी वहाँ लोक तो जहाँ शास्त्रीय की दरकार थी वहाँ पक्का गायन ही पेश किया। फिल्म मुगले आजम इसका उत्कृष्ठ उदाहरण है।

गीतों के फिल्मांकन के क्षेत्र में विजय आनन्द को अद्वितीय माना जाता है। 'हकीकत और गाइड' फिल्मों के सदाबहार गीत 'दिन ढल जाए पर रात ना आऐ' काँटो से छोड़ कर ये दामन, 'सैया बेईमान !' वास्तव में अविस्मरणीय है तथा इन गीतों का प्रसिद्ध होना भी अविस्मरणीय है उस समय के गीतों में राग, रस और ध्वनि को प्रधान रख जो गीत रचना की जाती भी वह वर्तमान में अपना स्वरूप खो चुकी है आज के निर्माता निर्देशक द्वारा गीतों का स्वरूप विगाड़ दिया जा चुका है परन्तु जो गीत पहले बनते थे तथा पसंद किए जाते थे वे आज भी सुनने में मधुर तथा आज भी कर्णप्रिय हैं। आज कुछ चुनिन्दा संगीतकार ही बाकी हैं जिनसे थे उम्मीद की जा सकती है कि हमारे गीत अपना अस्तित्व बनाए रखेंगे और ये उम्मीद जिन्दा रहेगी क्योंकि आज भी उन गीतों को सुनने वाले श्रोता जिन्दा हैं जिन्होंने हमेशा अच्छे संगीत को सुना भी है और सराहा भी है।